A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

किन्नौरी लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन

Dr. Sarita Negi
Assistant Professor, Music Department, Gurukul Kangri Deemed to be University, Haridwar

OPEN ACCESS CC BY

सार

किन्नौर हिमाचल प्रदेश में स्थित एक जनजातीय प्रदेश है। किन्नौर की अपनी अलग पहचान है। यह क्षेत्र देवी-देवताओं, ऋषि-मुनियों, साधु-संतों की तपोभूमि रही है। किन्नौर को विभिन्न नामों कन्नौर, कुनावर तथा कन्नौरिङ् से सम्बोधित किया गया है, स्थानीय बोली में इसे 'कनौरिङ्' कहते हैं क्योंकि यह शब्द स्थान विशेष तथा निवासियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। परन्तु आधुनिक समय में इस जिले के लिए प्रयुक्त नाम किन्नोर है। यहाँ के निवासियों 'कन्नौरे' या 'किनौरे' कहते हैं एवं स्थानीय बोली में इसे कन्नौरिङ् तथा हिन्दी में किन्नौर कहते है। किन्नौरी सभ्यता हिमाचल की प्राचीन सभ्यता है। किन्नौर हिमाचल प्रदेश में स्थित एक जनजातीय प्रदेश है।

मुख्य शब्द: *किन्नौर, लोकगीत, उख्याँङ्, बीश, राग, ताल*

स्रोत: *इस लेख के लिए द्वितीय स्रोतों एवं लोक कलाकारों से सम्पर्क द्वारा सामग्री एकत्रित की गई है।*

परिचय

किन्नौर हिमाचल प्रदेश में स्थित एक जनजातीय प्रदेश है। किन्नौर जिले की अपनी अलग पहचान है। यह क्षेत्र देवी-देवताओं, ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है। आधुनिक समय में इस क्षेत्र में मंदिर बौद्ध मठ पाए जाने का संकेत मिलते हैं। यहाँ प्राचीन काल से हिन्दु धर्म तथा बौद्ध धर्म की परम्पराओं का प्रचलन रहा है। भौगोलिक दृष्टि से यहाँ के लोगों का रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेश-भूषा, धर्म, लोकसंगीत, लोकनृत्य इत्यादि सभी विशेषताओं को धारण किए हुए संपूर्ण क्षेत्र अपना अलग विशेष स्थान रखता है।

किन्नौर को विभिन्न नामों से संबोधित किया गया है। महापंडित राहुल सांकृत्यान के मतानुसार यह 'किन्नर देश' है उनके अनुसार 'किन्नर' के लिए 'किम पुरुष' शब्द भी संस्कृत में प्रयुक्त होता है। लेह में किन्नरों को 'माऊन' कहा जाता है। 'माऊन' अथवा 'मोन' बुशहर के नामों में से एक है। किन्नौर के दूसरे नाम 'कनौर', 'कुनावर', 'कूनावुर' तथा 'कनौरिङ्' भी है। प्रायः सभी अंग्रेज यात्रियों ने इस क्षेत्र को 'कुनावुर' के नाम से पुकारा है। स्थानीय बोली में इस 'कनौरिङ्' कहते हैं। क्योंकि यह शब्द स्थान विशेष तथा निवासियों को लिए प्रयुक्त किया जाता है। अरस्तु कहते हैं कि जैसे भी हो आधुनिक 'कनौर' शब्द 'किन्नर' का अपभ्रंश है और किसी समय किमपुरुष प्रायः सारे हिमालय का नाम रहा होगा। यद्यपि आज वह संकुचित होकर बुशहर रियासत की एक तहसिल 'चिने' तथा कुछ नीचे उससे लगे हुए 20, 25 गांवों के लिए व्यवहृत होता है। फ्रेज़र के अनुसार 'कुनावर' बुशहर का वह भाग है जो समस्त उत्तर पूर्वी और पूर्वी भागों में फैला है और बर्फ के पहाड़ों के पीछे और मध्य में स्थित है।

भारतीय शास्त्रों में देवयोनियों के अंतर्गत विद्याधर, अप्सरा, यक्ष राक्षस, गंधर्व, पिशाच, गुहयक, सिद्ध और भूत आदि योनियों के साथ किन्नर जन भी सम्मिलित हैं।

विद्याधरोप्सरो यदा-रक्षो-गंधर्व किन्नराः। पिशाचो गुहयकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनमः ।।

किन्नर और किम्पुरुष वास्तव में एक ही माने जाते हैं क्योंकि किन्नर के लिए किम पुरुष शब्द भी संस्कृत में प्रयुक्त होता है। किन्नर और किमपुरुष शब्द में किम 'नर' तथा 'किमपुरुष दो शब्दों का स्पष्ट योग है। इसमें 'नर' और पुरुष दोनों शब्द 'मनुष्य' अर्थ के बोधक होने से परस्पर पर्यायवाची है

महापंडित राहुल सांकृत्यायन सन् 1926 की अपनी पहली यात्रा में जब किन्नौर से शुन्नजोत से सुन्नम गांव की ओर जा रहे थे तो वहाँ किन्नर महिलाओं के मधुर गीत स्वरों ने उन्हें विमोहित किया। इन महिलाओं के असाधारण मधुर कंठ से निकले संगीत को सुनकर उन्हें संस्कृत साहिय में की गई किन्नर कंठियों की प्रशंसा सही लगी उनको विश्वास हो गया कि किन्नौर वस्तुतः किन्नर देश है। किन्नौर के भिन्न-भिन्न नाम 'कनाऊर' शब्द से ही विकसित हुए हैं। 'कनाऊर' के ऊ का अन्तः स्थीकरण से 'व' होने 'कनावर' रूप बना। कनावर के 'क' वर्ण में 'अ' स्वर के स्थान पर कहीं-कहीं व वर्ण के 'अ' स्वर के स्थान पर भी 'उ' होने से कुनावर 'कूनावर' तथा कुनाबुर आदि शब्द रूपों का प्रयोग प्रचलित हुआ है। परंतु आधुनिक समय में इस जिले के लिए प्रयुक्त नाम 'किन्नौर' है तथा यहाँ के निवासियों 'कनौरे' या 'किनौरे' कहते हैं तथा स्थानीय बोली में इसे 'कनौरिङ्' कहते हैं।

यहाँ के लोकगीतों की परम्परा भी प्राचीन समय से चली आ रही है। किन्नौर में विभिन्न प्रकार के लोकगीत गाए जाते है। जिसमें उख्यांड अर्थात् फूलों का त्यौहार सम्बन्धी गीत, बीश गीथङ् (बैसाखी पर्व सम्बन्धी गीत) जानेटङ गीथङ् (विवाह सम्बन्धी) गीत, धार्मिक गीत, व्यक्तिगत गीत जैसे कि जाङमो पोती, सामाजिक गीत जैसे कि गुरकुम पोती आदि। उख्याङ् गीथङ् (फूलों का त्यौहार सम्बन्धी गीत)

उख्याङ् गीथङ् (फूलों का त्यौहार)

शुनो लीयो शुओ चारस राई दयारो ओमची।
ठ शुन्याझोश हो नीङ् ता मा थासीच।
ऊ पाइतैसु हो (ऊ) राङ् मुसुबैन्डी
खोगे थाक्पा बुसे ली दुई कोद बङ् फलु, दुरो योटङ पौनुदुरो।
रीङ्-रीङ् बीमा शोने नालो।
ऊ मा ताड्या आन्ज पालेसु मोमा।
ताङ् ली तांझोक हो गुई राङु कोमो
तौते ली काई हो गुई सागडु ऊ।
गुद पाटयाचे हो डालङु औशाङ्सी
गुद पाटयाचे।
बाङ पाटयाचे हो डालङु ओशासी बाङ् पाटयाचे।
चुनाङु मुंडयाल हो थुदल्यो मोल्यासु चुनाङु मुंडयाल।
जोल्ची मुंडयाल हो परका शांकरासु
जोल्ची मुंडयाल।
शुम बाल्या जोङ्ङ्गोर कैलाश पर्वतो
शुम बाल्या जोङ्गोर।
तिश बाल्या जोङोर हो ईश्वर नारायणु
तिश बाल्या जोङोर ।
गुई बाल्या जोङोर हो थुदल्यो मौलासु
गुई बाल्या जोङ्गोर।
जुगले उख्याङ् ली हो होले रूपी टैरासु
जुगले उख्याङ्।
योटुक्पा उख्याङ्
ली हो होले निज़ा बादुरे
नार-नार ली निश दयार।
काशो उख्याङ् ली हो होले ब्यूगले
बादूरे जुगले इन्द्रौमाङ्
काशौ उख्याङ् ली हो बङ्गी पाङ्बो
बङ्गी शाकङो।
बङ्गी पाबङ् ली हो होले लौस्कार
च्यु मुंडयाल बङ्गी पाबङ्।
शोमेनु उख्याङ् ली होले कात्याङ
मौक्शीरङ् शोमेनु उख्याङ्
शोप्चे पाबो ली हो होले राज़कानडु

A Pratibha Spandan's Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

मुंडयाल शोप्चे पाबो।
राचकानङ मुंडयाल ली हो होले शाङ्चे ब्रासु पोले
राचकानङु मुंडयाल।

भावार्थ - उख्याङ् यानि (फूलो का त्यौहार) लगभग संपूर्ण किन्नौर में अति लोकप्रिय है। गीत के बोल हामस्काद यानि मूल किन्नौरी में है यह त्यौहार सितम्बर महीने में अलग-अलग तिथि में मनाया जाता है। त्यौहार से एक दिन पहले गांव से दूर ऊंचाई पर स्थित पाबङ् (पहाड़) से फूल लाने की जिम्मेदारी गांव के कुछ युवकों को दी जाती है वे फूल बांधने की डोरी एवं खाद्य सामग्री लेकर ऊंचे पहाड़ पर भांति-भांति के फूल चुनकर लाते हैं तथा उनका सुंदर गुलदस्ता बनाकर अपने-अपने ग्राम्य देवी-देवताओं को अर्पित करते हैं। गांव के युवक-युवतियों द्वारा गायन एवं नृत्य किया जाता है।

फूलों के त्यौहार सम्बन्धी गीत (उख्याङ्)

गीत के बोल - ज़ुगले उख्याङ् ली हो

होले रूपी टैलेरासु

जुगलं उख्याङ्

बारह मात्रा की ताल (ढीली नाटी की ताल)

ताल के बोल एवं चिन्ह-

धीं	टाँ	टाँ	धीं	टाँ	टाँ	धीं	टाँ	टाँ	धीं	कड	कड
x			2			3			4		
स-	रेम	रे	स	रे-	-	म	म	म	स	रे	स
ज़ुग	लेऽ	ऽ	उ	ख्याँ	ङ्	ली	हो	ऽ	हो	ऽ	ले
मरे	सध	स	रे	स	स	स	रेऽ	म	म	स	धपध
रूऽ	पी	टै	ले	रा	सु	ज़ु	गऽ	ले	उ	ख	याऽङ
x			2			3			4		

प्रस्तुत गीत दुर्गा राग के स्वरों पर आधारित है। गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों पर गाई जाती है।

बीश गीथङ (बैसाखी गीत)

कोनिको मूछो गूंगाती ले कोनिको मूछो गूंगाती।
चापती बानो गूंगाती ले चापती बानो गूंगाती।
माची-माची चे फौमा चे ले थार बतो था ब्याङ् रीं।
कोमो ली कोमो फोमाचे ले बैरङ् ली बैरङ् फोमाचे।
नापनो नाले बीशूरी दू ले बीशूरी नीमा ठ लानतोंई।
बीशूरी नीमा सासाई कांई ले, बीशूरी नीमा सासाई कांई।
बीशुरी शा ता शु चुमचुम ले, बीशुरी शा ता शु चुमचुम।
नापनो नाले राजाले दुले नापनो नाले राजाले दु।
राजाले नीमा गोनगोनी कांई ले
राजाले नीमा गोनगोनी कांई।
गोन गोन कर-कर ठ लानते ले गोन गोन कर-कर ठ लानते।

गोन गोन कर-कर कौंडु तागमु।
गोन-गोन कर-कर कौंडु तागमु।
कौंडु ताग-ताग ठ लानतोंई ले कौंडु
तागताग ठ लानतोंई।
कौंडु ताग ताग पोले शैई ले कौंडु
ताग ताग पोलेशैई।

भावार्थ बीश (बैशाखी) त्यौहार अप्रैल महीने में मनाया जाता है। यह गीत पूर्बनी (गांव का नाम) बीश से सम्बन्धित है। इस गीत में बताया गया है कि गांव की दो युवतियाँ बकरी के बच्चे का वेश धारण करती हैं तथा उनके पीछे दो युवक शेर का रूप धारण कर उनका शिकार करते हैं। इस गीत की रचना मनो-विनोद के लिए की गई है।

शुभरात गीथङ् (शिवरात्रि गीत)

बिशमोन पोरो माटी नाई ठाटी गोसैंया
पूर्वा बिले का आओशा बागुरो हाशा।
बागुरे हाशे सोरो चुकौंदी लाई, सोरे चुकीयो शेपो उपज़ो।
शेपो फुटीयो पिण्ड उपज़ो।
पिंड फुटीयो माज़ोरमो महादेव।
बिशमोन पोरो आपु महादेव।
जाखानी शिरका सूर्य चन्द्रीरा।
शिरेका माज़ोरमो विष्णु।
जाखनी शिरेका ब्रह्म, भाउई शिरेका विष्णु।
त्रोण मूर्ति गुनामुनी कीमो।
बीशोमोन पोरो माटी नाई ठाटी गो सैंया।
आंदे लागो शक्लो माटी सोई माटी बोसोंदी नाई।
आंदे लागो बोलो रातो माटी सोई माटी बोसोंदी नाई।
आंदे लागो बोलो काले माटी सोई माटी बोसोदें लागो।
पोए रे ठासो सात पोइएताल पाङ् शिरे ठासो।
सात पाइए ताल सोरगङ, चांदे लागो, सुनो रूपैरो
मानुष, चीज़ांदो लागो सुनांदो नाई।
चानदै लागो तांबो पीतलो मानुष।
सोई मानुष ले दास ठीका पोप।
चानंदे लागो छारू कतारूओ सोई मानुष।
मानुष लो दा ठीमा दोषेसोई मानुष सुनांदे लागो।
गाली देनो तु मोरो झोंपरी शोबोरी कपार मुट्ठी
बोंदी जो कापटीक आग।
पहले शुभरात्रि कोसे घौर दैनु
पहले शुभरात्रि राज्जा घौर दैन
राज़ो छोटु पुज़ो भी न जानो।
पहले शुभरात्रि वज़ीर घोर दैनु वज़ीरो छोटु पुज़ो भी न जानो।

A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

भावार्थ: यह गीत डोमङ्स्काद यानि (हरिजन बोली) में है। यह त्यौहार किन्नौर में केवल बढ़ई जाति द्वारा मनाया जाता है तथा उच्च जाति के लोगों को केवल अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया जाता हैं। इस त्यौहार को ये बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इस गीत में शिवजी के उत्पत्ति के समय के विषय में बताया गया है। उस समय धरती पर कुछ नहीं था पूर्व की ओर से एक हवा का झोंका आया तथा यहाँ की मान्यता है कि जिसे ध रती हिलने लगी जिससे शिवजी के पिण्ड की उत्पत्ति हुई तथा ऐसा भी माना गया है कि सूर्य, चन्द्र, तारे, विष्णु भी इनके बाद ही उत्पन्न हुए हैं। इस त्यौहार को मनाने का ढंग न तो राजा को, न हि राजा के वजीर को और न हि उच्च जाति के लोगों को पता था। केवल इस जाति के लोग जानते थे इसे मनाने का ढंग इसी कारण यह केवल इन्हीं के द्वारा आज मनाया जाता है।

शिवरात्रि गीत

गीत के बोल - बिशमोन पोरो माटी नाई ठाटी गोसैंया

पूर्वा बिले का आओश बागुरे डाशा

ताल के बोल एवं चिन्ह- १४ मात्रा की ताल

धा	धिं	ऽ	धा	धा	तिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	धा	धिं	ऽ
x			2				0						
धप	म	-	ध़	रे	ध़	प़	ध़	रे	प	प	ध	म	म
बिश	मो	न	पो	रो	मा	टी	ना	ई	ठा	टी	गो	सैं	या
रेम	म	म	प	प	ध	म	स	रे	प	प	प	मंप	धम
बिश	मो	न	पो	रो	ऽ	मा	टी	ना	ई	ठा	टी	गोऽ	सैंया
x			2				0						

यह गीत राग दुर्गा के स्वरों पर आधारित है। परन्तु गीत के सौन्दर्यावृद्धि के लिए एक स्थान पर तीव्र मध्यम का प्रयोग किया गया है वो कि लोकगीतों में स्वाभाविक है। गीत की शेप पंक्तियाँ भी इन्हीं स्वरों में गाई जाती है।

वैवाहिक गीत

विवाह सम्बन्धी गीत को यहाँ 'राणेटङ् गीथङ्' कहा जाता है जो कि लोकप्रिय गीत है। राणेटङ् गीथाङ् ब्याही जाने वाली युवती की सखियां एवं गांव की अन्य स्त्रियों द्वारा गाया जाता है यह एक विदाई गीत है-

नीङो गुनज्ञाले कीनु एच्छीचु मानी जु
मुलुक संसारो नीतो। मुलुक संसारो
जु शुरैच गौठङ्। हायेसी लानज्ञोश
जु कामङ् बातङ्। हायीसी मानी कीशीसी
लानज्ञोंई योटङ् माजोमी सुङ्। दामकीयु
गुण्यामची नीराच गुण्याम मानीमा याब-याब
बीतोश। आन्यो ज़ाङ्चो माइटे आन्यो
सोयो मन-बोन। बीमीगी हाचे द्ववारयो
बाइरङ्। हाम ठ दो ली तोंई माजो मी सुङ्।
चोप ना तोल्याई किशु हुर कोरङ्
पूज़ो लानो प शिङ् प राग।
रोनाची सी नीरंई जैस्की थेमारंई

A Pratibha Spandan's Journal
SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निङोगुज्ञालीयु। बोसोन ली शेरंई
कानोङो ऊ रङ खाको गीथङ रङ।
पशे मा पशे प्रायो गोरिङ् दैन।
चाङ्कुम मैलिङ् दैन लोच्या पान।
बादा मा बादा सीज़ोन बासमोन्ती ।
बादची नीतो आनुरितङ्सी।
द्ववाशा मा द्ववाश आनेनु युमे आमा।
द्ववाची नीतोश गुदो दीवाङ् रङ्
ऊ बेन्डी रङ्। थ्वाक्सी डालङ्ज्ञोश
आनेनु युमे आमाओ। थ्वाक्सी जर
जाङ्जोश आनेनु युमे आमास।
जोद मा माजोद तेलङ दीवाङ् तेलङु
मालोन मारू लो दीवाङ्।
जो ची नीतोश आनेयु पोखरङ्सी।
हाम ठ दो तोंई गरो युङजे। हाम ठ दो
तोंई चोकसी नीरंई। पूजा लान्नु पराग
प शिङ्काशो डोम्बोरू रौनचिसी
नीरंई। पाथारो डोम्बोर
कीसी थोम्यारंई। नीङ्गे गोनज्ञालीयु
बोसोन। बोसोन ली शेरंई।
ऊ पुलिङ् पानठो में छुतोश निछोल
सुराग खानदान। की गोटयो माइक्योंई
सुराग खानदान। गुनज्ञालीयु आसे तान्ना
गोनज्ञालीयु बोनयुञ्ज कोचाङ्।
फोल-फोल सुनतोश खाताङो में पारतोश
फामशि की था चालंगई माइटे थोगिस
गोरछाङ् आमाओ ज़ागो युमे ता बापु ज़ागाओ
आपा। दाऊचे ज़ागाओ बोरे।
निङोगुनज्ञाली सुमोनु चिमैद हाचिराई।
ओमरातिङ यागरंई युम रातिको सारशिरंई।
ती छाम ली लाङ्यारी जाङु छाम थिनरांई।

भावार्थ: 'राणेटङ गीथङ' में किन्नौर में समानता पाई जाती है। परन्तु गांव के अनुसार कुछ भिन्नता भी पाई जाती है। यहाँ पर रार क्षेत्र के विवाह गीत के विषय में बताया गया है कि सखियों तथा माता-पिता से विछुड़ने पर युवती दुखी होती है तथा सखियों द्वारा समझाया जाता है दुखी न हो यह संसार की रीत है एक दिन सभी को माता-पिता का घर छोड़ दूसरे घर जाना होता है। इसके साथ ही माजोमी यानि बिचौलिए को इस विवाह गीत के माध्यम से यह भी समझाती है कि कन्या पक्ष के लोगों के साथ कन्या को विवाह के सम्बन्ध में जो भी बात कहे उसे अच्छी तरह गांठ बांध ले। इस गीत में यहाँ के समाज में वर पक्ष की अपेक्षा कन्या (वधू) पक्ष का स्थान ऊंचा होने का भाव व्यक्त होता है। यहाँ के समाज में कन्या पक्ष द्वारा अपनी कन्या के लिए वर की खोज करना बुरा माना जाता है। किन्नौर में दहेज जैसी कुरीतियां नहीं है इसलिए जो भी सामान कन्यापक्ष वाले देते है उस पर कन्या का पूरा अधिकार होता है। कन्या की विदाई के समय युगल बिचौलियों को इस गीत के माध्यम से घर की नींव के चार (स्तम्भों) तथा नींव के

A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

चारों कोनो की पूजा करने के लिए कहा जाता है। इसके पीछे यह मान्यता है कि घर की नींव के चार लक्कड़ तथा नींव के चार कोनों के चार पत्थर गृह रक्षक देवों का स्थान होते हैं। उनसे वधु की भलाई हेतु प्रार्थना की जाती है। वर के घर पहुंचने पर वही पूजा फिर से की जाती है। वधु को यह भी समझाया जाता है कि वह अपने ससुराल वालों के साथ मधुर व्यवहार बनाए रखे फिर भी कोई कठिनाई आए तो उसके घर वाले उसकी रक्षा करेंगे।

विवाह गीत (जानेटङ् गीयाङ्)

गीत के बोल: नीङो गुनज्ञाले कीनु एच्छीचु मानी

मुलुक संसारो नीतो जु शुरैञ गोटङ्।

हायसी लानज्ञोश जु कामङ् बातङ्।

हायसी मानी कीशीसी लानज्ञोई

जु कामङ्-बातङ्।

नौ मात्रा की ताल

ताल के बोल एवं चिन्ह -

टिं	-	टाँटाँ	धिं	ना	ना	धिं	ना	ना
x		2		3		4		

प	पग़	स	स	ग	-	प	धप	- -
नी	ङोऽ	गु	न	ज्ञा	ऽ	ले	ऽऽ	ऽऽ
पग़	स	सध़	पध़	प	-	प	-	-
कीऽ	नु	एऽ	छीचु	मा	ऽ	नी	ऽ	ऽ
x		2		3		4		

वैयक्तिक गीत

बांठिन गुरकुम पोती (सुंवरी गुरकुम पोती)

रचनाकार - अज्ञात

गीतकाल - 1870 के लगभग

उदगम स्थान - सायराक (योशुवाङ)

लोकभाषा/गीत के बोल - हामस्कद (मूल किन्नौरी)

हाया बे होना ता गोलि गो होना।
गोलि गो होना ताले दो शौङ्-शौङ् बीमा।
जाखरयो युवारिङ् बिष्टु गोरिदैन।
बिष्टु गोरिङ दैन पांजे दोशा मादोश।
मात्तोन्निग बासक्याङ् आनेनु इ पोटो पान्जे।
नामङ् ठ दुज्ञोश। नामङ् ता लोन्ना।

नेगी गुरदास बज़ीर। पांजे बासक्याङ्।
आनेनु शुम जाई। आनेनु शुम जाई जैशमाङ्
से जाई। मारखोना चु जाड़ें।
माजङ् से जाई आकपा बिष्टु गोरे।
कोनसाङ् से जाई बाठिन गुरकुम पोती।
गुरकुम बाठिनिस लोतोश ग किमो बीतोक।
जा बिष्पोनु किमो, तोङाओ युन-युन
जाड़े बिष्पोनु पेरङ्स लोतोश, बाठिन गुरकुम पोती।
आई तोरो तोशीं, मत्ती डुलखाङ् फन्नते।
माश्कोको बीज्ञोश बाठिन गुरकुम पोती जाखरेयो युवारिङ्।
युवारिङ् बासक्याङ् चिने सानताङो
चिने सानताङो देवाराम पापी आङ् छाङ् मानी रीङो।
दे लोन्निगें बेर गुरकुम बांठिनस लोतोश
मुठ बात रिहो तोई किन छाङ मानी
चालमा शारुक्सी ख्यारांई।
गुरकुम बाठिनस लोतोश आङ युङजे गुरदास नेगी।
आई औरजी राजा पङ लोरंई।
चिने चारासु देवाराम पापी आङ छाङ मानी रिङो दु।
लोन्यो बेरङ् गुरदास बज्रीरिस लोतोश।
ग राजा पङ् मालोक की दरबारो बीरंई
महाराजु औरजी लानरांई।
बीम ता बीज्ञोश बाठिन गुरकुम पोती खोना रामपुरा।
बाठिन गुरकुमीस लोतोश इ औरज़ी रीङतोक
रौनचोंई मा रौनचोंई।
महाराज़ीस लोतोश किन ठ दुऔरज़ी ग।
हाला मा रौनचौक।
गुरकुम पोतीस लोतोश चिने चारासु देवाराम
पापी आङ् छाङ् मानी रीङो।
महाराज़ीस लोतोश, ने ठ रीङोतोई ग
चिने बतक, शारूक्सी ख्यातोक।
दोक्ली मा हाचिमा ग कीनु फीचौक।
फीम ता फीज्ञोश महाराजीस फीज्ञोश।
महाराजु पौलगीओ बुलबुली साङे रङ्।

भावार्थ-बाठिन गुरकुम पोती यहाँ का एक प्राचीन गीत है। इस गीत का रचनाकाल लगभग 1870 ई. के आसपास माना गया है। इससे इस गीत के ऐतिहासिक महत्त्व का अनुमान लगाया जा सकता है। गीत नायिका के प्रेम तथा गास्दिक प्रसंगों से जुड़ा है। गुरकुम पोती युवारिङ निवासी बज़ीर गुरदास नेगी की बहन थी। चिनी ग्राम के चारस वंशीय देवाराम ने विवाह का वचन देकर गुरकुम से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किए परन्तु गुरकुम जब उसके बच्चे की माँ बनने वाली थी तो उसने विवाह करने से इनकार कर दिया। उसने गुरकुम के बच्चे का पिता होना भी स्वीकार नहीं किया। हारकर लज्जित गुरकुम ने अपना कलंकित जीवन समाप्त कर देने की सोची परंतु दुखियारी ने कायरों की भांति हार मानने की बजाय जीवन के

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

अंतिम क्षण तक अपने पुत्र के अधिकार तथा न्याय के लिये लड़ने की ठान ली। इस प्रकार अधिकार और न्याय के लिए लड़ते-लड़ते एक दिन वह बुशहर दरबार पहुँचकर अपने बच्चे को उसका अधिकार दिलाने में सफल हुई। अन्त में उसके भाग्य ने ऐसी करवट ली कि वह स्वयं भी महाराज शमशेर सिंह के अन्तःपुर में पहुंच गई।

सुंदरी गुरकुम पोती सम्बन्धी गीत

गीत के बोल - होले दौ शौङ्-शौङा बीमा जाखोरयो युवारिङ्

बिष्टु गोरिङ्ग दैन, पांजे दोशा मा दोश।

मात्तोनिग बासक्याङ् आनेयो इ पोटो पांजे

आनेयो इ पोटो पानज़ेयो नामङ् ठ दुजोश।

बारह मात्रा की ताल

ताल के बोल एवं चिन्ह-

धिं	धिं	नाना	धिं	धिं	नाना	धिं	धिं	नाना	टाँटाँ	ऽटाँ	टाँ
x			2			3			4		

म	-	प	धप	म	-	पम	स	म	धप	धसं	पधं
हो	ऽ	से	दोऽ	लो	ऽ	शौङ्	शौ	ङ्	बीऽ	लीऽ	ऽऽ
म	स	म	म	म	पध	म	मरे	ध़	-	स	-
मा	ऽ	या	जा	ऽ	लाऽ	खो	रयौ	यु	वा	रि	ङ्
x			2			3			4		

प्रस्तुत गीत दुर्गा राग के स्वरों पर आधारित है। गीत की अन्य पंक्तियां भी इन्हीं स्वरों पर गाई जाती है।

जाङ्मो पोती

कवियित्री - गंगासरनी

गीतकाल - 1940-42

उदगम स्थान - किल्बा

गीत के बोल - योशुवाङ् शैली (मूल किन्नौरी)

गोली गो होना हायाबे होना।
दो शौङ् शौ बीमा बाटिचो किलिम्बा
थोरिङ आस्पातालो डॉक्टर बाबू हात तोश
डॉक्टर बाबू लोन्ना चुन्नी लाल डाक्टर
चुन्नी लाल डाक्टर गुरबाई हात दु ज़्रोश
गुरबाई ता लोन्ना शोआङ् ज़ैलदारू छाङ्
शोआङ् ज़ैलदारू छाङ कम्पोटर जेहर सिंह।
दो योटङ् गुरबाईऊ बेन्नङ् ली बोदी।
चुनी लाल डाक्टरू कोनिच्च हात दुज़्रोश।
कोनिच्च ता लोन्ना थङ् गोरोह जाई नामङ ठ दुज़्रोश।

नामङ् ता लोन्ना बांठिन जाङ्मो पोती
जाङ्मो पोतीस लोतोश ओखी-सोखी
बेरङ् बाई-साई मोरज़ात तारंई।
दो लौन्निगु बेरङ् जाङ्मो पोती बीज्ञोश।
बॉठिन जाङ्मो पोतीयु कोनिच हात दुज्ञोश।
कोनिच्च ता लोन्ना बांठिन किशन चोगती।
किशन भोगतीस लोतोश कोनिचु या
कोनिच्च पाईं राङो बीते ज़ीमीऊँ प्रोहरी लाननु।
जाङमो पोतीस लोतोश बीमु ता बीते शिलपुग फिते।
देलोन्यो बेरङ् कोनिचा बीज्ञोश।
जीमीऊ पोहरी लानिम बेरङ् जाङमो पोती टोज्ञोश।
किशन भोगतीस शेज्ञोश चुन्नी लालु नामो चिट्ठी।
कोनिचु पीरङ् थास-थास रातोराति राङो बीज्ञोश।
चुन्नी लालिस लोतोश कोनिच्चु या
कोनिच्चु पीरङ् हाले तोह।
जाङ्मो पोतिस लोतोश आङ् पीरङ्
माजल्यामिग दैस तो।
चुन्नी लालिस लोतोश पाईं इलाज़ो बीते।
जाङ्मो पोतीस लोतोश आङ् बोलासी मानी युन्नु
की माहान्ना ग फिचिम फीचोक
दे लोन्यो बेरङ् चुन्नी लाल डॉक्टरीस इलाज लानज्ञोश।
पीरङ् दाम हाचिमू बेरङ् जाङ्मो पोतीस लोतोश
जु जौन्म बासक्याङ् आइ जौन्मो इमान तातक।
हुनाउ बेरङ् शौङ् जाङ्मो पोतीयु इमान।
शीम्याग्चु इमान बासक्याङ् जु छे इमान मा ताता।
हुनागु बेरङ् शौङ् कौठि स्थानो नामशा
जाङ्गो पोतीस लोतोश आङ् बाहो मा लाज्ञादो नु देसी कोचा।
चुन्नी लालीस लोतोश आङ् ज़हर सिंह
गुरबाई छैस छाङ विश्वास था लानरांई।

भावार्थ जाङ्मो पती नामक यह गीत इस सदी के चालीस के दशक का है। इस गीत का नायक गैर-किन्नौर वासी तरुण डॉक्टर चुन्नीलाल है। जिसकी तैनाती अंग्रेजी शासन काल में किल्बा के जंगलात विभाग के अस्पताल में हुई थी। यहाँ डॉ० चुन्नीलाल का जाङ्मो पती नामक स्थानीय युवती से प्यार हो जाता है। एक समय जो सम्बन्ध निःस्वार्थ सच्चे प्यार का आदर्श रूप ले लेता है वहीं परिस्थितिवश नायिका के मन में अपने परदेसी मीत के प्रति असुरक्षा का भय जाग जाता है जिसके फलस्वरूप उस पर माता-पिता द्वारा थोपे गए विवाह का विरोध करने का साहस नहीं होता है। वह इस गीत में एक बेवफा और स्वार्थी नायिका के रूप में उभरती है।

सुंदरी जाङमो पोती सम्बन्धी गीत

गीत के बोल - दो डेना-डेना बीलीमा याले बाटीशु किल्बा

थोरिङ् आस्पातालो डाक्टर बाबू हात तोश।

डाक्टर बाबू लोन्ना चुन्नी लाल डाक्टर

चुन्नी लाल डाक्टरू नीछोलु कोनिच़

लोन्ना बाठिन जाङ्गो पोती।

बारह मात्रा की ताल

ताल के बोल एवं चिन्ह-

धिं	धिं	नाना	धिं	धिं	नाना	धिं	धिं	नाना	टाँटाँ	ऽटाँ	टाँ
x			2			3			4		

सरे	ग	प	गरे	स	ध़	प	स	स	-	स-	ध़
दोऽ	डे	ना	डेऽ	ना	ऽ	बी	ली	मा	ऽ	याऽ	ले
सरे	ग	-	प	-	मरे	स	ध़	प़	स	स	स
बाऽ	टी	ऽ	शु	ऽ	कीऽ	ली	ऽ	म	ऽ	बा	ऽ
x			2			3			4		

इस गीत में भूपाली राग के स्वरों का प्रयोग है जिससे कि भूपाली राग स्पष्ट होता है। गीत की अन्य पंक्तियाँ भी इन्हीं स्वरों में गाई जाती है।

निष्कर्ष

किन्नौर भौगोलिक दृष्टि से पर्वतीय दुर्गम क्षेत्र होते हुए भी सांगीतिक दृष्टि से यह सुगम एवं समृद्ध है। यहाँ के लोकगीतों का विषय एक ओर प्रकृति तथा रीति-रिवाज़ है तो दूसरी ओर धार्मिक आस्था, सामाजिक घटना सम्बन्धी, व्यक्तिगत गीत भी मिलते हैं। ये लोकगीत रागों पर आधारित होते हैं। लोकगीत राग पहाड़ी, दूर्गा, भूपाली, मधमाद सारंग और कहीं-कहीं जोग आदि रागों पर आधारित है। किन्नौरी लोकगीत के साथ जो ताल बजाई जाती है उसका स्थानीय लोकभाषा में कोई विशेष नाम नहीं है। यहाँ अगर हम शास्त्रीय संगीत की बात करें तो यह 14 मात्रा की दीपचंदी ताल के अनुरूप मानी जा सकती है। परन्तु इसके बजाने की शैली दीपचंदी से बिल्कुल अलग है। इस प्रकार हम यहाँ के लोकगीतों में प्रयुक्त तालों को संख्याओं के आधार पर ही बारह, चौदह, सात, ग्यारह मात्रा मानेंगे।

संदर्भ

सांकृत्यायन राहुल, किताब महल, इलाहाबाद 2006
नेगी, डॉ० सरिता, किन्नौर की विभिन्न लोकभाषाओं में गाए जाने वाले लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन, नैतिक प्रकाशन, उ0प्र0 2020
भेड़ पालक: किन्नौर के संदर्भ में (सामाजिक अध्ययन), सेन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ तिब्बतन स्टडीज़ संस्थान, वाराणसी, 2007
Captain Gerard, Account of Koonawar, Indus Publishing Company, New Delhi, 1841.